Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SHISRRJ | Volume 1 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

# वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत चीन सम्बद्ध

**डॉ विकास चन्द्र वशिष्ठ**
**एसो, प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ, भूमिका**

**सारांश–** भारत–चीन सम्बन्धी को सामान्य बनाने के लिए निम्न वार्ताए की और कई प्रश्नों पर महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किये गये। अत्यधिक उपयोगी समझौता था– भारत–चीन सीमा विवाद पर वास्तविक नियन्त्रण रेखा के साथ साथ सैनिक क्षेत्र में विश्वास उत्पन्न करने वाला समझौते। यह समझौता उन उपायों को जो 1993 में नर सिम्हा राव चीन यात्रा के अवसर पर आरम्भ किये गये थे। जिनका उद्देश्य सम्बनधों को सामान्य बनाना था और वार्ताओं में चीन ने भारत के एक राज्य के रूप में सिक्किम का प्रश्न नहीं उठा उसी प्रकार भारत ने पाकिस्तान के साथ चीन सम्बन्ध । और पंचशील सिद्वान्तों की उपयोगिता को भी बताया गया है जो शांति के लिए बनाए गये है।

**मुख्य शब्द–** भारत, चीन, संग्राम, सम्बन्ध, सीमाविवाद,सैनिक, पंचशीलसिद्धान्त।

---

चीन के प्रति भारत का दृष्टिकोण प्रारम्भ से ही मित्रापूर्ण रहा है। हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दिनों से ही पण्डित जवाहर लाल नेहरू भारत और चीन की मित्रता पर बल दिया साम्यवादी चीन ने भारत के प्रति अपना विचार सही नहीं रखा

और साम्यवादी चीन सन् 1942 में च्यांग काई शेक ने भारत की यात्रा की जिससे भारत में चीन के जापानी साम्राज्यवाद के विरूद्व संघर्ष के प्रति सहानुभूति की एक लहर फैल गयी चीन में साम्यवादी दल के विजय के बाद भारत–चीन सम्बन्ध और घनिष्ट हो गये। अक्टूबर 1942 में चीन में साम्यवादी क्रान्ति का भारत में स्वागत किया। गैरदृसाम्यवादी क्रान्ति का भारत में स्वागत किया। गैरदृसाम्यवादी देशों में भारत ही ऐसा पहला देश था। जिसने चीन को राजनयिक मान्यता प्रदान की संयुक्त राज्य अमेरिका में भारत ने उस प्रस्ताव का विरोध किया जिसमें चीन को आकृर्षित घोषित किया गया था। भारत ने अमेरिका की उन नीतियों की आलोचना , की जो चीन को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों या सभ्यताओं में उचित स्थान दिलाने में बाधा प्रस्तुत की थी। सन् 1954–57 का काल भारत–चीन सम्बन्धीमें प्रमोद काल कहलाया है। 29 जून 1954 को दोनों राष्ट्रों के मध्य एक 8 वर्षीय व्यापारिक समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत भारत ने तिब्बत से अपने से अतिरिक्त देशीय अधिकारों को चीन को सौंप दिया। इस व्यापारिक समझौते की प्रस्तावना में ही पंचशील के सिद्वान्तों की रचना की गयी थी। भारत ने तीव्र तिब्बत में चीन की प्रभुसत्ता को स्वीकार कर लिया 1954 अक्टूबर में पंडित नेहरू ने भी चीन की यात्रा की अप्रैल 1955 में माण्डुत्र सम्मेलन में नेहरू और चाऊ एन–लाई ने पूर्ण सहयोग के साथ कार्य किया।

यदि यह कहा जाए कि 1980 में देसाई द्वारा की गयी पहल का उपयोग किया तो यह सत्य होगा और इन्दिरा गांधी ने वे सभी प्रयास किये जो भारत के सम्बन्ध सुधारने हेतु होने अनिवार्य थे और भारत सम्बन्ध सुधारने के प्रयास जारी रखे। मई 1980 में युगोस्लाविया के राष्ट्रपति टीटो की अत्येष्टि के समय बेलग्रेउ में श्रीमती गांधी ने अपने देश का प्रतिनिधि किया यह दोनों देशों की प्रथम भेंट थी। दोनों नेताओं ने सम्बन्ध सुधारने की प्रक्रिया को गति देने का निर्णय किया। यह देखा गया कि सन 1980 के बाद चीन स्वतः इस बात का प्रयास करने लगा कि उसका भारत के साथ सकारात्मक सम्बन्ध बने भारत न तो अपने ओर से कोई विशेष कार्यवाही करने का इच्छुक नहीं था और न पाकिस्तान के साथ भी अपनी
और से मैत्री में कोई कमी या समझौता करना चाहता था। वह नेपाल और बांग्लादेश के साथ भी अपने सम्बन्धों में कोई कमी या समझौता परिवर्तन किये बिना च भारत के प्रति मित्रता का हाथ बढ़ा रहा था। चीन ने यह नीति अपनाई कि सीमा की जटिल समस्या को पृथक रख कर दोनों को अपने राजनीतिक, आर्थिक, वाणिज्य, सांस्कृतिक तथा सामाजिक सम्बन्धी के विकास के लिए कार्य करना चाहिए।

भारत ने सामान्य रूप से यह स्वीकार किया कि कुछ समय के लिए सीमा विवाद को न छोड़ा जाये । परन्तु अनिश्चित काल के लिए यथास्थिति बनाये रखना भारत के हित में नहीं था। चीन के वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध नेता डेंग जिआ–ओपिग के एक सुझाव के अनुसार वर्तमान नियत्रंण रेखा को अर्न्तराष्ट्रीय सीमा का रूप दिया जाना था। संबंधित भाग को उसका स्थायी भाग मसला इस सुझाव की विशेषता थी। डेंग ने एक भारतीय शिष्टमण्डल के नेता जी पार्थसारथी से अक्टूबर 1982 में कहा था कि सबसे अच्छा तो यह होगा कि सीमा विवाद को कुछ समय के लिए भूला दिया जाए। और इनको आगे की ओर बढ़ा दिया जाए। श्रीमती गांधी की भेंट चीनी प्रधानमंत्री झाओ जियांग से कैन्क़न में 1981 में हुई। जब दोनों देश के नेता वहां हो रहे उत्तर –दक्षिण सम्मेलन में भाग लेने गये। दोनों देशों के अधिकारियों के मध्य 1983 तक यह सहमति हो गयी थी कि वे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, कला एवं खेलकूद के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाकर अपने द्विपक्षीय सम्बन्धों का विस्तार करके इस समस्या को सुलझाने के लिए 1988 में तत्कालीन प्रधानमंत्री ने चीन की यात्रा की परन्तु परिणाम निषेधात्मक ही रहे। जुलाई 1986 तक अधिकारी स्तर की सात वार्ताएं हो चुकी थी फिर भी सीमा विवाद का कोई समाधान नहीं हुआ। चीन की ओर से यह संकेत अवश्य मिला कि यदि पश्चिमी क्षेत्र में लद्दाख का लो प्रदेश चीन के पास है उसे उसके पास स्थायी रूप से रहने दिया जाये तो वह पूर्व में मैकमोहन रेखा को स्वीकार कर सकता था राजीव गांधी, नेहरू के पश्चात् चीन यात्रा करने वाले प्रथम प्रधान मंत्री थे अन्य नेताओं के अतिरिक्त राजीव गांधी ने वयोवृद्ध चीनी नेता डेंग से भी भेंट की डेंग ने भी तीन मिनट तक राजीव गांधी के समक्ष ऐसा वातावरण तैयार करने में अवश्य सफल हये। जिससे पहले से अच्छे सम्बन्धों का विकास हो सकें।

सन 1991 से 96 तक नरसिम्हा राव सरकार के पास पूर्ण बहुमत नहीं था परिणामतः यह सरकार चाहते हुए भी कुछ कार्य नहीं कर पाती थी। यह बहुमत जुटाने की ओर अधिक ध्यान देती रही। फिर भी चीन के साथ सम्बन्ध सामान्य बनाने की संभावना पर विचार होता रहा। दिसम्बर 1991 में ली फंग

के भारत आगमन का प्रमुख कारण सहयोगात्मक वार्ता थी। वार्ता के पश्चात् जारी संयुक्त वक्तव्य में अंतर्राष्ट्रीय गुटतंत्र से उत्पन्न खतरों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया।

भारत और चीन सम्बन्धों के उभरते परिप्रेक्ष्य में वरिष्ठ राजनयिक और पूर्ण विदेश सचिव लगत एस0 मेहता ने कहा कि चीन और भारत को द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् उपनिवेशवाद–रहित संसार के दो मार्गदर्शकों के रूप में आंका गया था दोनो विकास सम्बन्धी समस्याएं मिलती–जुलती थी। आज भी कई विषयों पर सामान्य हित और दृष्टिकोण है। 1993 में ली फंग के निमन्त्रण पर प्रधानमंत्री नरसिम्हाराय चीन गये तो वह इस बात पर दिया गया कि सीमा विवाद निलम्बित रखा जाए तथा ऐसे प्रयास किये जास कि पारस्परिक सम्बन्ध सकारात्मक बने रहे राव तथा ली फंग ने यह निश्चित किया कि जब तक सीमा विवाद का निर्णय नहीं हो जाता, दोनों पक्ष नियन्त्रण रेखा पर पूर्ण शांति बनाये रखेंगे। भारत–चीन सीमा विवाद जिन क्षेत्रों से सम्बद्ध है वे है भारत की 90,000 वर्ग किलोमीटर भूमि जिस पर चीन का दावा, भारत का अपनी उस 30,000 वर्ग किलोमीटर भूमि पर दावा किया जिस पर चीन का अनाधिकृत अधिकार है क्या 5000 वर्ग किलोमीटर का कश्मीर का वह क्षेत्र जिसे पाकिस्तान ने अपने कब्जे वाले क्षेत्र में से चीन को दे दिया।

सन् 1990 के आस–पास चीन की इस सम्बन्ध को सुधारने का प्रयास किया क्योंकि वह यह जानता था कि इसके अभाव में पारस्परिक सहयोग बाधित होगा तथा विकास कार्यों में अवशेष आएगा चीन के राष्ट्रपति जियांग जेमिन जो कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधान की है नवम्बर 1996 में भारत यात्रा पर आये। भारत आने वाले चीन के पहले राष्ट्रपति ओर पार्टी अध्यक्ष थे।

**कोरिया के जरिए चीन से निपटेगा भारतः**

सोल (द०कोरिया) दो हजार साल पहले कोरियाई राजकुमार ने अयोध्या की राजकुमारी से शादी कर भारत से पारिवारिक रिश्ता स्थापित किया था। अब दक्षिण कोरिया भारत से आपसी हितों की साझा देखभाल के लिए सुरक्षा रिश्ते मजबूत

करना चाहता है। इसी इरादे से चीन के पड़ोस में भारत ने पूर्व एशिया में सुरक्षा का एक और गढ़ बनाने की ओर कदम बढ़ाया है। द. कोरिया के राष्ट्रपति ली म्यूंबाक ने पी०एम० मनमोहन सिंह से बातचीत केबाद भारत और द० कोरिया के बीच रक्षा और परमाणु क्षेत्र में सहयोग और मजबूत करने पर लोर दिया। प्रधानमंत्री सिंह ने घोषणा की कि भारत इस साल के अंत तक द०कोरिया में अपना रक्षा अताशे तैनात करेगा। भारत ने उससे आग्रह किया कि वह विश्व के अग्रणी परमाणु संगठनों, एनएसजी (न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप), एमटीसीआर (मिसाइल तकनीक के प्रसार पर रोक की सहमति) और वासेनार अरेंजमेंट में भारत को सदस्य के तौर पर शामिल होने में समर्थन दें। राजनयिक सूत्रों ने बताया कि राष्ट्रपति ली ने भारत को समर्थन देने का वादा किया है।

पिछले साल दोनों देशों के बीच परमाणु सहयोग का समझौता हुआ था आर . दो साले पहले सामरिक साझेदारी का रिश्ता बनाने का फैसला हुआ था। अब दोनों इसकी मजबूत नींव पर सुरक्षा सहयोग का मजबूत ढांचा खड़ करेंगे। दो साल पहले रक्षा मंत्री एंटनी ने द० कोरिया दौरे में रक्षा सहयोग का समौता हुआ था ली ने कहा कि दोनों देशों के बीच लाभदायक रक्षा सहयोग के कई क्षेत्र हैं जो आगे विस्तार लेगें। पीएम सिंह ने कहा, भारत भी द० कोरिया के साथ राजनयिक औ र सुरक्षा रिश्ते मजबूत करने की उम्मीद करता है।

द०कोरिया परमाणु तकनीक में काफी उन्नत है और उसकी परमाणु बिजली कंपनियां भारत में निवेश करना चाहती हैं। प्रधानमंत्री ने द०कोरिया की चिंता से सहमति जताते हुए उ०कोरिया के रॉकेट परीक्षण की योजना की निंदा की। ली ने कहा कि दो साल पहले समग्र आर्थिक साझेदारी का समझौता करने के बाद आपसी व्यापार 70 प्रतिशत बढ़ा है जो 2014 तक बढ़कर 40 अरब डॉलर हो जाएगा।

यहाँ परमाणु सुरक्षा शिखर बैठक में भारी व्यस्ता के बावजूद ली ने राष्ट्रपति निवास ब्लू हाउस में प्रधानमंत्र मनमोह सिंह के साथ सलामी गारद का निरीक्षण कियाऔर राजकीय भोज दिया। सिंह ने अपने भोज भाषण में ली का ध्यान कोरियाई राजकुमार और अयोध्या की राजकुमारी की दो हजार साल पहले हुई शादी की ओर दिलाया और कहा कि दोनों के बीच ऐतिहासिक रिश्ते रहे हैं।

**साउथ चाइना सी से दूर रहे भारतः चीन**

पेइचिंग! दक्षिण चीन सागर को विवादित क्षेत्र बताते हुए चीन ने भारत को वियतनामी ब्लॉक में तेल उत्खनन से दूर रहने की चेतावनी दी है ताकि क्षेत्र में 'शांति और स्थिरता' बनी रह सके।

चीन के विदेश मंत्रालय में एशिया विभाग के उप महानिदेशक सुन वेदोंग ने कहा, 'यह क्षेत्र विवादित है। इसलिए हमें नहीं लगता कि यहां तेल उत्खनन करना भारत के लिए अच्छा होगा।'

भारत को इस 'विवादित' क्षेत्र में शामिल नहीं होने के लिए आगह करते हुए उनहोंने कहा कि क्षेत्र में द्वीपों की संप्रभुता एक बड़ा मुद्दा है और भारत को मुद्दा हल होने तक तेल उत्खनन नहीं करना चाहिए।

यहां आए भारतीय पत्रकारों के एक समूह से बातचीत में सुन ने कहा, 'हम क्षेत्र में साझा विकास चाहते हैं। हमें उम्मीद है कि भारतीय पक्ष इन विवादों में नहीं पड़ेगा। हमें उम्मीद है कि भारत क्षेत्र में शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए और कुछ करेगा।

यह पूछे जाने पर कि वियतनामी तेल ब्लॉकों में भारत की उत्खनन परियोजनाओं पर चीन क्यों आपत्ति कर रहा है, जबकि चीन की कम्पनियां पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में ढांचागत परियोजनाएं चला रही हैं, उन्होंने कहा दोनों मुद्दे पूरी तरह से अलग हैं।

उन्होंने कहा, 'ये पूरी तरह से भिन्न मुद्दे हैं। जहां तक कश्मीर का सम्बन्ध है, हमने हमेशा कहा है कि यह एक द्विपक्षीय मुद्दा है और भारत व पाकिस्तान को इसे आपस में हल करना चाहिए।

**भारत–चीन सैन्य आदान प्रदान से बढ़ेगा भरोसाः**

भारत दृचीन के बीच समुद्री सहयोग पर सहमत होने के बाद अब बीजिंग ने नई दिल्ली के साथ सैन्य संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने की इच्छा जताई है। चीन ने कहा है कि मिलिट्री एक्सचेंज (सैन्य आदान–प्रदान) से दोनों देशों के बीच आत्मविश्वास व भरोसे को और अधिक मजबूत बनाने में मदद मिलेगी।

**चौथे सम्मेलन में भाग लेने भारत आ रहेः**

चीन विदेश मंत्रालय में एशियाई विभाग के उप महानिदेशक सन विडांग ने – कहा, "सैन्य आदान–प्रदान से हमें एक दूसरे के साथ आत्मविश्वास व भरोसे को और अधिक मजबूत बनाने में

मदद मिलेगी। उनका यह बयान ऐसे समय आया है कि जब चीनी राष्ट्रपति हू जिंताओ की बुधवार से नई दिल्ली यात्रा शुरू हो रही है। वे ब्रिक्स देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) के चौथे सम्मेलन में भाग लेने भारत आ रहे हैं।

**सैन्य गतिविधियों को स्थगित कर दियाः**

सन ने कहा, 'भारत के साथ दौरे का आदान–प्रदान व सैन्य सहयोग को लेकर हमारी सेना के लोगों का रूख सकारात्मक है। मेरा मानना है कि चीन और भारत सामरिक सहयोगी हैं। मिलिट्री का आदान–प्रदान व सहयोग इसी का एक हिस्सा है। बता दें कि अगस्त 2010 में जम्मू व कश्मीर के उधमपुर में तैनात एक शीर्ष सैन्य कमांडर को आधिकारिक दौरे के लिए बीजिंग जाने की अनुमतिन दिए जाने के बाद भारत ने चीन के साथ सैन्य गतिविधियाँ को स्थगित कर दिया था।

**अभ्यास 2007 में चीन के कुनमिंग में**

भारत ने चीन के साथ तीसरे दौर का हैंड इन हैंड नामक सैन्य अभ्यास भी रोक दिया था। गौरतलब है कि दोनों देशों के बीच पहली बार सैन्य अभ्यास 2007 में चीन के कुनमिंग में हुआ था। जबकि 2008 में दूसरा सैन्य अभ्यास बेलगाम में हुआ। सैन्य संबंधों को फिर से सुधारने के लिए भारत ने पिछले साल जून में एक सैन्य प्रतिनिधिमंडल बीजिंग भेजा था। गत नवम्बर में चीन ने भी इसी तरह का अपना एक प्रतिनिधिमंडल भारत भेजा। समुद्री सहयोग के लिए दोनों देशों की नौसेना के बीच हुई प्रगति के बाबत पूछे जाने पर सन ने कहा कि दोनों देशों के बीच लम्बी समुद्री सीमा है, संबंधित विभाग इस प्रस्ताव पर काम कर रहे हैं।

**सीमा पर तनाव घटाने पर भारत–चीन राजीः**

आपसी विवाद के कांटेदार रास्तों से गुजरते हुए भारत और चीन ने सरहद पर तनाव घटाने के मकसद से सीमा प्रबंधन तंत्र गठित करने पर मंगलवार को सहमति बना ली। दोनों देशों की विशेष प्रतिनिधि स्तर की 15वें दौर की वार्ता के अन्तिम दिन इस तंत्र को स्थापित करने पर सहमति बनी। चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की और से प्रस्तावित इस वर्किंग तंत्र को वजूद में लाने पर मुहर भारतीय विशेष प्रतिनिधि शिवशंकर मेनन और उनके चीनी समकक्ष दाई बिंगुओं के बीच वार्ता के अंतिम दिन लगी।

**बार्डर प्रबंधन तंत्र गठन पर सहमत हुए दोनों देश :**

विदेश मंत्रालय ने देर शाम बताया कि वर्किंग मैकेनिजम फोर कंसल्टेशन एंड कोऑर्डिनेशन ओन इंडिया–चाइना बॉर्डर अफेयर्स समझौते पर चीन में भारत के राजूदत एस० जयशंकर और चीनी उप विदेश मंत्री लिउ झेमिन ने दस्तखत किए। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, इस तंत्र को सरहद विवाद को निर्णायक तरीके से सुलझाने या मौजूदा विशेष प्रतिनिधि मैकेनिज्म को प्रभावित करने का अधिकार नहीं दिया जा रहा है। दोनों देशों के बीच सीमा पर भारत और चीन के बीच हुए पुराने समझौते के तहत शांति बनाए रखने की दिशा में प्रयास इस तंत्र के जरिये होंगे। वर्किंग मैकेनिजम दोनों देशों के बीच सीमा पर सैन्य सहयोग और एक्सचेंज को मजबूत करने के उपायों और तरीकों का अध्ययन भी करेगा।

**वर्किंग मैकेनिज्म को लाने के लिए हुआ करारः**

भारतीय विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारी और चीनी विदेश मंत्रालय के महानिदेशक स्तर के अधिकारी इसके प्रमुख होंगे। इसमें दोनों – तरफ से राजनयिक और सैन्य अधिकारी भी रहेंगे। विदेश मंत्राल ने बताया कि वर्किंग मैकेनिजम सीमावर्ती इलाकों में दोनों ओर ऐसी गतिविधियों या मुद्दों का निपटारा करेगा जो सरहद पर शांति भंग करते हो। इसका लक्ष्य दोनों देशों के बीच तनाव पैदा होने के सीमा पर उपजने वाले कारणों पर काबू पाने का भी होगा। साल में एक या दो बार यह तंत्र चर्चा करेगा जो भारत और चीन में बारी बारी से होगी। अगर जरूरत हुई तो आपातकालीन बैठक भी आपसी सहमति से बुलाई जा सकती है। इसके साथ ही दोनों पक्षों ने वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) को लेकर आपसी सहमति का सम्मान करने में ही दिलचस्पी दिखाई है।

**हम नहीं मानते कि चीन भारत पर हमला करेगाः प्रधानमंत्री**

हिंद महासागर में चीन द्वारा सैन्य ठिकाना बनाने संबंधी खबरों के बाद उपजी खतरे की धारणाओं को खारिज करते हुए प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा है कि उनकी सरकार को ऐसा नहीं लगता कि चीन, भारत पर हमला करेगा। मनमोहन सिंह ने लोकसभा में कहा, हमारी सरकार इस विचार से सहमत नहीं है कि चीन,

भारत पर हमला करेगा।

प्रधानमंत्री एक प्रश्न का जवाब दे रहे थे, जिनमें कहा गया था कि चीन हिंद महासागर के द्वीपीय देश के पास सेशेल्स में एक बंदरगाह का निर्माण कर रहा है,जिसके जरिए नौ सेना के पोत अफ्रीका से लगे समुद्र में लूट विरोधी अभियानों में हिस्सा लेगें। बीजिंग ने उस रिपोर्ट को खारिज कर दिया है, जिनमें कहा गया है कि यह बंदरगाह सैन्य ठिकाने के रूप में परिवर्तित होगा। मनमोहन सिंह ने खतरे की धारणा को खारिज कर दिया और कहा कि भारत और चीन की सीमा पर कुल मिलाकर शांति बरकरार है।

सिंह ने स्वीकार किया कि चीन के साथ सीमा विवाद पर कोई खास प्रगति नहीं हुई है, लेकिन उन्होंने सदन को आश्वस्त किया कि उच्च पदस्थ चीनी अधिकारियों ने भारत के साथ शांति एवं सदभाव बनाए रखने का उन्हें भरोसा दिया है। इससे पहले एक पूरक प्रश्न के उत्तर में विदेश राज्यमंत्री ई० अहमद ने स्वीकार किया कि भारत और चीन के विशेष प्रतिनिधियों के बीच नवम्बर के अंत में होने वाली 15वें दौर की बातचीत तिब्बतियों के धर्मगुरू दलाई लामा की राजधानी में प्रस्तावित उपस्थिति के कारण टल गई थी।

अहमद ने बताया कि दलाई लामा को 27 से 30 नवम्बर तक दिल्ली में एक कार्यक्रम में हिस्सा लेना था। चीनने इस पर आपत्ति जताते हुए भारत सरकार से हम नहीं मानते कि चीन भारत पर हमला करेगाः प्रधानमंत्री

हिंद महासागर में चीन द्वारा सैन्य ठिकाना बनाने संबंधी खबरों के बाद उपजी खतरे की धारणाओं को खारिज करते हुए प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा है कि उनकी सरकार को ऐसा नहीं लगता कि चीन, भारत पर हमला करेगा। मनमोहन सिंह ने लोकसभा में कहा, हमारी सरकार इस विचार से सहमत नहीं है कि चीन,

भारत पर हमला करेगा।

प्रधानमंत्री एक प्रश्न का जवाब दे रहे थे, जिनमें कहा गया था कि चीन हिंद महासागर के द्वीपीय देश के पास सेशेल्स में एक बंदरगाह का निर्माण कर रहा है,जिसके जरिए नौ सेना के पोत अफ्रीका से लगे समुद्र में लूट विरोधी अभियानों में हिस्सा लेगें। बीजिंग ने उस रिपोर्ट को खारिज कर दिया है, जिनमें कहा गया है कि यह बंदरगाह सैन्य ठिकाने के रूप में परिवर्तित होगा। मनमोहन सिंह ने खतरे की धारणा को खारिज कर दिया और कहा कि भारत और चीन की सीमा पर कुल मिलाकर शांति बरकरार है।

सिंह ने स्वीकार किया कि चीन के साथ सीमा विवाद पर कोई खास प्रगति नहीं हुई है, लेकिन उन्होंने सदन को आश्वस्त किया कि उच्च पदस्थ चीनी अधिकारियों ने भारत के साथ शांति एवं सदभाव बनाए रखने का उन्हें भरोसा दिया है। इससे पहले एक पूरक प्रश्न के उत्तर में विदेश राज्यमंत्री ई० अहमद ने स्वीकार किया कि भारत और चीन के विशेष प्रतिनिधियों के बीच नवम्बर के अंत में होने वाली 15वें दौर की बातचीत तिब्बतियों के धर्मगुरू दलाई लामा की राजधानी में प्रस्तावित उपस्थिति के कारण टल गई थी।

अहमद ने बताया कि दलाई लामा को 27 से 30 नवम्बर तक दिल्ली में एक कार्यक्रम में हिस्सा लेना था। चीनने इस पर आपत्ति जताते हुए भारत सरकार से दलाई लामा का कार्यक्रम टालने या पूरी तरह रद्द करने का आग्रह किया था, लेकिन सरकार ने चीन की इस सलाह को मानने से मना कर दिया। इसके परिणामस्वरूप दोनों देशों के विशेष प्रतिनिधियों के बीच होने वाली वार्ता अंतिम समय पर टल गई थी। उन्होंने कहा कि पन्द्रहवे दौर की बातचीत के लिए आपसी मशविरे के बाद फिर से नई तिथि निर्धारित की जाएगी। सरकार दोनों देशों के बीच जारी विवाद के ल के लिए विश्वास बहाली के उपाय (सीबीएम) कर रही है।

**2013 में चीन से तेज दौड़ेगा भारतः**

देश में तेजी से हो रहे औद्योगिकीकरण से भारतीय अर्थव्यवस्था 2013 मेंचीन से भी तेज गति से विकास करेगी ये अनुमान वैश्विक सलाहकार अनर्स्ट एंड यंग ने लगाया है।

हालांकि अनर्स्ट एंड यंग की आज जारी रिपोर्ट में आगाह भी किया गया है कि इसके लिए मंहगाई को काबू करना जरूरी है। अंदाजा है कि इस साल भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 7.2 प्रतिशत ही रहेगी। पिछले वित्त वर्ष में यह 8.2 फीसदी थी। जबकि अगले साल वृद्वि 8 प्रतिशत की दर से बढ़ने की उम्मीद है। इसमें कहा गया है कि 2013 के कैलेण्डर साल में तेजी से बढ़ते बाजारों में भारतीय अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद की वास्तविक वृद्धि दर 9.5 प्रतिशत की होगी। उसके बाद चीन का नम्बर होगा, जो 9 फीसद की आर्थिक वृद्धि दर हासिल करेगा।

इसमें 2014 की भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 9 प्रतिशत रहने की उम्मीद जताई गई है, जबकि उस दौरान चीन की वृद्धि दर 8.6 फीसद रहेगी। यह अनुमान भारत, चीन, ब्राजील और रूस सहित कुल 25 देशों पर आधारित है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में कमी से भारत और चीन ज्यादा बेहतर तरीके से मुकाबले करने में सक्षम हैं, क्योंकि इनका घरेलू बाजार काफी बड़ा है। इसमें कहा गया है कि भारत का कुल परिदृश्य सकारात्मक नजर आता है, पर उसे मंहगाई से निपटने की जरूरत होगी।

अनर्स्ट एंड यंग के भागीदार और भारतीय बाजार के प्रमुख फारूक बलसारा ने कहा कि भारत की खपत आधारित अर्थव्यवस्था लघु अवधि में आकर्षक निवेश गंतव्य बनी रहेगी।

**भारत, चीन के लोग भविष्य के संभावित ग्राहकः ओबामा**

गरीबी उन्मूलन के क्षेत्र में भारत और चीन द्वारा पिछले काफी कमसमय में किए गए कार्यों की प्रशंसा करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने कहा है कि एशिया की इन ताकतवर अर्थव्यवस्थाओं के लोग भविष्य के संभावित ग्राहक हैं द्य

एशिया प्रशांत के शीर्ष मुख्य कार्यकारी अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि चाहे चीन की बात हो या भारत की, ये उभरती अर्थव्यवस्थाएं बहुत छोटे से अरसे में गरीबी उन्मूलन के लिए काफी काम कर रही हैं। साथ ही दुनिया के सामान्य लोगों को अवसर उपलब्ध करा रही हैं। यह एक शानदार बात है।

उन्होंने कहा कि इन दो देशों के लोग हमारे भविष्य के संभावित ग्राहक हैं। ओबामा ने कहा कि उनके प्रशासन ने चीन के साथ दो साल में काफी खुले मन से बात की है। इससे दोनों देशों को फायदा हुआ है।

**तेजी से बढ़ रहे हैं भारत, चीन–ओबामा–** अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने कहा है कि भारत और चीन जैसे देश काफी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने आगाह कि अमेरिका को इन देशों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

न्यूयार्क में धन जुटाने के लिए आयोजित एक कार्यक्रम में ओबामा ने कहा कि चीन और भारत जैसे देश तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। उनमें सफलता की भूख है। वे आगे निकल पड़े हैं। ओबामा ने खुलासा किया कि 2008 में वह इसलिए राष्ट्रपति चुनाव में उतरे क्योंकि इस दुनिया में अमेरिका को बेहतर रोजगार के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

ओबामा ने कहा कि लम्बे समय से हमें बताया जाता रहा कि इस प्रतिस्पर्धा को जीतने के लिए उपभोक्ता संरक्षणवाद से दूर रहें, स्वच्छ वायु एवं स्वच्छ जल कानूनों को नजरअंदाज करें, करोड़पतियों को कर रियायतें दें और सब कुछ ठीक रहेगा। लेकिन यह फार्मुला काम नहीं आया । वास्तव में अगर आप इतिहास देखें तो पता चलेगा कि यह दर्शन काम न आया।

**उपसंहार–** भारत और चीन के सम्बन्धों 1954 से वर्तमान तक बहुत उतार–चढाव रहा इस प्रकार इसके दो प्रमुख कारण थे पहला कारण यह था कि दोनों देशों की सीमा विवाद है चीन ने अवैध रूप से तिब्बत पर कब्जा कर लिया। 20 अक्टूबर 1962 तक भारत के 14500 वर्ग मील भूमि पर अपना कब्जा कर लिया यह भूमि दिसम्बर 1983 तक उसी के कब्जे में थी इस विषय पर भारत और चीन में कई बार वार्ता हुई। इन वार्ताओं के कोई ठोस परिणाम नहीं निकले। चीन ने यह प्रस्ताव आक्साईचीन (लद्दाख) का भाग जो गैर कानूनी रूप से उसके कब्जे में है उसके पास रहने दिया जाए।

दूसरे चीन ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के एक भाग गिलगित और हुंजा को चीन से मिलाने के लिए एक सड़क का निर्माण किया यह सड़क तिब्बत से होकर गुजरती थी और तिब्बत की राजधानी ल्हासा को पाकिस्तान से जोड़ती है। विश्वास उत्पन्न करने वाले उपायों से सम्बन्धित समझौता 1996 नवम्बर में चीनी राष्ट्रपति और चीनी साम्यवादी दल के प्रधान जियांग जेमिन ने भारत की

महत्वपूर्ण यात्रा की चीन के साम्यवादी दल के राष्ट्रपति ऐसे प्रथम राष्ट्रपति थे जिन्होंने भारत की यात्रा की।

भारत–चीन सम्बन्धी को सामान्य बनाने के लिए निम्न वार्ताए की और कई प्रश्नों पर महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किये गये। अत्यधिक उपयोगी समझौता था– भारत–चीन सीमा विवाद पर वास्तविक नियन्त्रण रेखा के साथ साथ सैनिक क्षेत्र में विश्वास उत्पन्न करने वाला समझौते। यह समझौता उन उपायों को जो 1993 में नर सिम्हा राव चीन यात्रा के अवसर पर आरम्भ किये गये थे। जिनका उद्देश्य सम्बनधों को सामान्य बनाना था और वार्ताओं में चीन ने भारत के एक राज्य के रूप में सिक्किम का प्रश्न नहीं उठा उसी प्रकार भारत ने पाकिस्तान के साथ चीन सम्बन्ध । और पंचशील सिद्वान्तों की उपयोगिता को भी बताया गया है जो शांति के लिए बनाए गये है। इक्कीसवी सदी के प्रारम्भ में दोनों देश एक दूसरे के काफी समीप आ गये थे तथा इनमे पारस्परिक भावना को स्थान मिल रहा था।

भारत अपनी सुरक्षा को किसी भी प्रकार से चीन के दबाव में नहीं आना चाहता है। इसी बीच चीन–पाकिस्तान सामरिक गठबंधन मजबूत हो रहा है और ऐसे में भारत को अपनी रक्षा सम्बन्धी तैयारियां जंग के दोहरे मोर्चे के आधार पर पुखता करनी चाहिए। हमें पर्याप्त शक्ति जुटा लेनी चाहिए ताकि हमले का मुहतोड़ जवाब दिया जा सकें। ऐसे समय में जब चीन हिमालय क्षेत्र में शक्ति का आभास कर रहा है और अन्य मोर्चों पर भी दबाव बढ़ा रहा है। भारत के विदेश मंत्र एस०एम० कृष्णा कुटनीति रूप से अपने आप को खाली समझ रहे हैं। वह चीन से बार बार अपनी वार्ता को पूर्ण कराने की कोशिश कर रहे हैं। अगर चीन जम्मू–कश्मीर को भारत से अलग मानते हुए इसके लोगों को अलग शीट वीजा जारी करता है तो भारत को भी तिब्बत को अलग मानते हुए वहां के निवासियों को अलग शीट वीजा जारी करना चाहिए इसमें उन सभी तिब्बतियों को भी शामिल करना चाहिए, जो अब तक तिब्बत को चीन की जंग नहीं मानते है। इसके अलावा हीन जाति के वे सभी लोग भी इसी दायरे में आने चाहिए जो 1951 में तिब्बत पर चीन के विस्तार से पहले तिब्बत में नहीं बसे थे। चीन ने आधे से अधिक तिब्बत को किनघाई, तनयुआन, युनान और गानसु प्रांतों में मिला लिया है।

## संदर्भ सूची


1. डॉ० बी०एल० फडिया– अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगर, 1997 पृ0 382।
2. डॉ० पुखराज जैन, साहित्य भवन पब्लिकेशन, भारतीय शासन एवं राजनीति–आगर 1981 पृष्ठ 761।
3. आर०सी० अग्रवाल– भारत की विदेश नीति, किताब घर हाईकोर्ट रोड ग्वालियर प्रकाशकः 1984 पृ0 220।
4. डॉ० राम प्रवेश शर्मा भारतीय विदेश नीति, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली– 2009 पृष्ठ 322।